परमात्म ऊर्जा

सारे ज्ञान का सार 6 शब्दों में बुद्धि में आने से सारा ज्ञान रिवाइज़ हो जाता है। तो नशा कम होने कारण निशाना ऊपर-नीचे हो जाता है। अभी-अभी फुल फोर्स में नशा रहता, अभी-अभी मध्यम हो जाता है। नीचे की स्टेज तो खत्म हो गई ना। नीचे की स्टेज क्या होती है, उसकी अविद्या होनी चाहिए। बाकी श्रेष्ठ और मध्यम की स्टेज। मध्य की स्टेज में आने के कारण रिज़ल्ट व निशाना भी मध्यम ही रहेगा। वर्तमान समय अपनी स्मृति की स्टेज में, सर्विस की स्टेज- दोनों में अगर देखो तो रिज़ल्ट मध्यम दिखाई देती। मैजारिटी कहते हैं- जितना होना चाहिए उतना नहीं है। उस मध्यम रिज़ल्ट का मुख्य कारण यह है कि मध्यकाल के संस्कारों को अभी तक पूरी रीति भस्म नहीं किया है। तो यह मध्यकाल के संस्कार अर्थात् द्वापर काल से लेकर जो देह-अभिमान व कमज़ोरी के संस्कार भरते गये हैं उनके वश होने कारण मध्यम रिज़ल्ट दिखाई देती है।

कम्पलेन भी यही करते हैं कि चाहते नहीं हैं लेकिन संस्कार बहुत काल के होने कारण फिर हो जाता। तो इन मध्यकाल के संस्कारों को पूरी रीति भस्म नहीं किया है। डॉक्टर लोग भी बीमारी के जर्मस(कीटाणु) को पूरी रीति खत्म करने की कोशिश करते हैं। अगर एक अंश भी रह जाता है तो अंश से वंश पैदा हो जाता। तो इसी प्रकार मध्यकाल के संस्कार अंश रूप में भी होने कारण आज अंश है, कल वंश हो जाता है। इसी के वशीभूत होने कारण जो श्रेष्ठ रिज़ल्ट निकलनी चाहिए वह नहीं निकलती। कोई से भी पूछो कि आप अपने आप से सन्तुष्ट, अपने पुरुषार्थ से, अपनी सर्विस से व अपने ब्राह्मण परिवार के सम्पर्क से सन्तुष्ट हो, तो सोचते हैं। भले हाँ करते भी हैं लेकिन सोच कर करते हैं, फलक से नहीं करते। अपने पुरुषार्थ में, सर्विस में और सम्पर्क में- तीनों में ही सर्व आत्माओं के द्वारा सन्तुष्टता का सर्टिफिकेट मिलना चाहिए। सर्टिफिकेट कोई कागज पर लिखत नहीं मिलेगा लेकिन हरेक द्वारा अनुभव होगा। ऐसे सर्व आत्माओं के सम्पर्क में अपने को सन्तुष्ट रखना व सर्व को सन्तुष्ट करना इसी में ही जो विजयी बनते हैं वही अष्ट देवता विजयी रत्न बनते हैं।

दो बातों में ठीक हो जाते, बाकी जो यह तीसरी बात है उसमें यथा शक्ति और नम्बरवार हैं। हैं तो सभी बातों में नम्बरवार लेकिन इस बात में ज़्यादा हैं। अगर तीनों में संतुष्ट नहीं तो श्रेष्ठ व अष्ट रत्नों में नहीं आ सकते। 'पास विद ऑनर' बनने के लिए सर्व द्वारा सन्तुष्टता का पासपोर्ट मिलना चाहिए। सम्पर्क की बात में कमी पड़ जाती है।

सम्पर्क में सन्तुष्ट रहने और सन्तुष्ट करने की बात में पास होने के लिए कौन-सी मुख्य बात होनी चाहिए? अनुभव के आधार से देखो, सम्पर्क में असंतुष्ट क्यों होते हैं? सर्व को सन्तुष्ट करने के लिए व अपने सम्पर्क को सन्तुष्ट करने के लिए व अपने सम्पर्क को श्रेष्ठ बनाने के लिए मुख्य बात अपने में सहन करने की व समाने की शक्ति होनी चाहिए।

कथा सरिता

सकारात्मक सोच की शक्ति

एक बार की बात है एक बहुत ही दयावान आदमी था। वह हर रोज़ सुबह घर से काम के लिए निकलते हुए कुछ लोगों की मदद करता था, जैसे सबसे पहले वह एक घर की बालकनी से गिरते हुए पानी को व्यर्थ होने से बचाने के लिए वहाँ एक छोटे से पौधे वाला गमला रख देता है। जिससे पानी उस पौधे पर गिरे। इसके बाद वह थोड़ा और आगे जाता है वहाँ एक आदमी का ठेला एक गड्ढे में फंस जाता है, उसकी मदद के लिए कोई आगे नहीं आता तब वह आदमी उसकी मदद करता है। इसके बाद थोड़ा और आगे चलने पर एक बहुत ही गरीब लड़की जो पढ़ना चाहती है, वहाँ फुटपाथ पर बैठकर भीख मांगती है ताकि कुछ पैसे इकट्ठे हो सकें और वह पढ़ाई कर सके। वह आदमी उसे रोज़ कुछ पैसे देता है।

इस तरह वह रोज़ कुछ लोगों की मदद करता है, ऐसा वह हर रोज़ करता है। एक दूसरा आदमी उस आदमी को यह सारे काम हर रोज़ करते देखता है।

एक दिन उस दूसरे आदमी ने उस आदमी से पूछा कि - "भाई साहब आप रोज़ इन लोगों की मदद करते हैं लेकिन इससे क्या फर्क पड़ेगा? इससे केवल समय की बर्बादी होगी"। तब वह आदमी उस दूसरे आदमी से कहता है कि - "इससे मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता, इससे आपको भी कोई फर्क नहीं पड़ेगा और इससे इस दुनिया में भी किसी को कोई फर्क नहीं पड़ेगा किन्तु जो मैं करता हूँ वह मेरा फर्ज़ है, मैं सिर्फ अपना फर्ज़ निभा रहा हूँ और फर्ज़ निभाने में समय की बर्बादी नहीं होती। ऐसा कह कर वह वहाँ से चला जाता है। ऐसा करते-करते कुछ दिन बीत जाते हैं और फिर एक दिन वह देखता है कि वह बालकनी के नीचे रखा हुआ पौधा बड़ा हो गया है। फिर थोड़ा आगे जाकर वह हर रोज़ की तरह उस ठेले वाले आदमी की मदद के लिए जाता है तो देखता है कुछ और लोग उसकी मदद कर रहे हैं। फिर थोड़ा और आगे उस लड़की को पैसे देने के लिए जाता है तो देखता है कि वह लड़की वहाँ नहीं है, वह उसका वहीं इंतज़ार करता है, थोड़ी देर बाद वह लड़की एक स्कूल की यूनिफार्म पहनकर उसके सामने आती है।

यह सब देखकर वह बहुत खुश होता है लेकिन वह दूसरा आदमी भी यह सब देख रहा होता है, और यह सब देख कर उसे समझ आता है कि एक आदमी ने कोशिश की तो किसी का कितना भला हो गया इसी तरह यदि और लोग भी ऐसा करने लगें तो इस देश की पूरी सूरत ही बदल सकती है।

शिक्षा : इस कहानी से यह प्रेरणा मिलती है कि हमें नकारात्मक न सोच सकारात्मक सोचना चाहिए। व्यर्थ ही पैसे खर्च करने से अच्छा है कि किसी ज़रूरतमंद की मदद करें, क्योंकि इससे आपको खुशी मिलेगी और किसी को नया जीवन मिल जायेगा।

न्यायसंगत निर्णय

अवध देश के एक राजा थे जो बहुत दयालु एवं न्यायप्रिय थे। जिसकी ख्याति अन्य राज्यों में भी फैली हुई थी। उनके न्याय के लिए सभी उनकी प्रशंसा करते थे। प्रजा को भी अपने राजा पर नाज़ था। न्यायसंगत राजा होता है तो प्रजा में खुशहाली होती है और प्रजा भी सद्मार्ग पर ही रहती है।

एक दिन की घटना थी, राजा के पुत्र ने एक गंभीर अपराध किया जिसपर प्रजा में बात होने लगी कि अब राजा क्या निर्णय लेंगे। लेकिन राजा ने अपने पुत्र को गंभीर अपराध की कड़ी सजा दी। पर इसके बाद भी राजा के लिए अपशब्द सुनाई देने लगे। प्रजा में काना-फूसी शुरू हो गई, यह देख राजा अत्यंत दुःखी थे। एक दिन उन्होंने अपने विद्वान मंत्री से इस विषय पर बात की, कि हे महामंत्री! हमने तो न्यायसंगत ही निर्णय लिया पर इस अपयश का क्या कारण हो सकता है?

मंत्री ने सरलता से उत्तर दिया - हे महाराज जब आसमान में बदली छाती है तो एक छोटा-सा बादल भी सूर्य के तेज को कम कर देता है लेकिन बादल छटते ही सूर्य अपने तेज के साथ पुनः निकलता है। उससे उसकी ख्याति में कोई प्रभाव नहीं पड़ता। आपके बेटे से बड़ा अपराध हुआ है लेकिन आपका निर्णय न्यायसंगत है इसलिए आपके यश में इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। यह सुनकर राजा को संतुष्टि का अनुभव हुआ और वे अपने कार्यों में लग गए।

शिक्षा : जब इंसान धर्म के मार्ग पर न्याय संगत निर्णय लेता है तो उसे डरना नहीं चाहिए। और न ही किसी तरह के अपयश की चिंता में पड़ना चाहिए।

नगर-भरतपुर(राज.)। आचार्य श्री महंत स्वामी वीरेंद्रानंद पुरी जी को शॉल पहनाकर एवं ईश्वरीय सौगात भेंट कर सम्मानित करते हुए ब्र.कु. हीरा बहन। साथ हैं ब्र.कु. तारेस बहन।

गया-सिविल लाइन(बिहार)। दुर्गा पूजा के शुभ अवसर पर आयोजित चैतन्य देवियों की झाँकी का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए जनता दल यूनाइटेड प्रदेश सलाहकार विश्वनाथ कुमार निराला, होमियोपैथी चिकित्सक डॉ. बिनोद केशरी एवं राजयोगिनी ब्र.कु. शीला दीदी।

दिल्ली-गाज़ीपुर। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा गवर्नमेंट बॉयज़ सीनियर सेकेंडरी स्कूल गाज़ीपुर में नशा मुक्त भारत अभियान के तहत आयोजित कार्यक्रम में स्कूल के प्रिंसिपल पंकज शर्मा को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सुधा दीदी। साथ हैं ब्र.कु. रीता बहन। कार्यक्रम में स्कूल के टीचर्स, स्टाफ सहित 500 विद्यार्थीगण मौजूद रहे।